गीत:- यह कौन आज आया सवेरे.... ओम शान्ती प्रातः क्लास 9-1-1967

सवेरे कितने बजे होते हैं? सवेरे अर्थात कितने बजे आते हैं। (कोई ने कहा तीन बजे कोई ने कहा चार बजे कोई ने कहा संगम पर। कोई ने कहा बारहाँ बजे) बाबा एक्यूरेट पूछते हैं। 12 को तो तुम सवेरा कैसे कह नहीं सकते। 12 बजकर एक सैकिंड हुआ अथवा एक मिनट हुआ तो ए.एम अर्थात सवेरा शुरू हुआ। 12 बजकर एक मिनिट हुआ तब कहेंगे सवेरा। यह बिलकुल सवेरे हैं नां। ड्रामा में इनका पार्ट बिलकुल एक्यूरेट है। सैकिंड की भी देरी नही हो सकती है। यह ड्रामा अनादी बना हुआ है। 12 बजकर एक सैकिंड जब तक नही हुआ है तो ए.एम नही कहेंगे। यह बेहद की बात है नां। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ सवेरे। विलायत वालों का ए., एम पी, एम एक्यूरेट चलता है। हिन्दुस्तानीयों की कोई भी बात एक्यूरेट नही होती है। उनकी बुधी फिर भी अच्छी है। वो नां इतना सतोप्रधान बनते हैं, नां तमोप्रधान बनते हैं। भारतवासी ही 100% सतोप्रधान फिर 100% तमोप्रधान बनते हैं। तो बाप भी बड़ा एक्यूरेट है। सवेरे अर्थात 12 बजकर एक मिनट। सैकिंड का हिसाब नही रखते। सैकिंड पास होने में मालूम भी नही पड़ता। अब यह बातें तुम बच्चे ही समझते हो। दुनिया तो बिलकुल घोर अन्धेरे में है। बाप को सभी भक्त याद करते हैं कि हे पतित पावन आओ। दुःख में सभी याद करते हैं। परन्तु वो है कौन कब आते हैं यह कुछ नही जानते। तो जानवर मिसल ठहरे ना। जानवरों से भी बदतर हैं। मनुष्य होते हुये भी एक्यूरेट कुछ नही जानते। इसलिये कहा जाता है बन्दर से भी बदतर। क्यों कि पतित तमोप्रधान हैं। काम भी कितना तमोप्रधान है। बर्थ कन्ट्रोल लिये विलायत में भी रड़ियां मारते रहते हैं। अखबार में पड़ा था। एक गया विलायत में लिखा है वहां यूनिवरसिटी में होस्टल में जो रहते हैं जहां जावें वहां देखें लड़की और लड़का आपस में बैठे हैं। यूनिवरसिटी में भी इतना गन्द लगा हुआ है। विकार के लिये कितना बुरा खराब हाल है। फिर वृधी होना बन्द कैसे होगा? अभी बेहद का बाप आर्डीनेन्स निकालते हैं कि जो पवित्र नां बनते हैं तो विनाश को पावेंगे। तुम पवित्र बनने से अविनाशी पद को पावेंगे। तुम राजयोग सीख रहे हो नां। स्लोगन्स में भी लिखते हैं बी होली बी योगी। वास्तव में लिखना चाहिये बी राजयोगी। योगी तो कामन अक्षर है। ब्रह्म से योग लगाते हैं। वो भी योगी ठहरे। बच्चा बाप से, स्त्री पुरुष से योग लगाती है। परन्तु यह तुम्हारा है राजयोग। बाप राजयोग सिखाते हैं। इसलिये राजयोग अक्षर लिखना ठीक है। देहली में मालविय नगर वालों ने स्लोगन बनायी है। उसमें लिखा है बी होली, बी योगी। यह रांग है। फिर नया बनायें लिखो बी होली एंड राजयोगी। दिन प्रति दिन स्लोगन सुधरती रहती है। बाप भी कहते हैं आज तुमको गुह्य ते गुह्य अच्छी बातें सुनाता हूँ। अब शिव जयन्ती भी आने वाली है। शिव जयन्ती तो तुमको अच्छी रीत मनाना है। कोई ने लिखा था वहां प्लाट पड़ा है। शिव जयन्ती वहां मनावें? बाबा ने नही लिखा था। आज फिर लिख देता हूँ भल मनाओ। हां लिख देता हूँ। कहेंगे शिव बाबा ने नही लिखा फिर अब हाँ क्यों? अरे यह ड्रामा में ऐसे ही नूँध थी। ना करना भी ड्रामा में था, हाँ भी ड्रामा में है। शिव जयन्ती पर तो बहुत अच्छी रीत सर्विस करनी है। जिनके पास भी प्रदर्शनी है, सभी अपने-2 सैन्टर पर अथवा घर में शिव जयन्ती अच्छी रीत मनाओ और लिख दो शिव बाबा गीता ज्ञान दाता बाप से बेहद का वैसा लेनेका रास्ता पाने आकर सीखो। भल बत्तियाँ आद भी जगा दें फिर 2 में होनी चाहियें। तुम ज्ञान गंगायें हो नां तो हरेक पास गीता पाठशाला होनी चाहिये। घर-2 में गीता तो पढ़ते हैं नां। पुरुषों से भी माताये अधिक में तीखी होती हैं। ऐसे भी कुटुम्ब होते हैं जहां सभी गीता पढ़ते हैं। तो घर-2 में यह चित्र रख देने चाहियें। लिख दें कि बेहद के बाप से आकर फिर से अपना वर्सा लो। तुम सच्ची-2 दिवाली मनाते हो नां। फाइनिल तो होगा सतयुग में। वहां घर-2 में रोशनी ही रोशनी होगी। अर्थात हर आत्मा की ज्योती जगी रहती है। यहां तो अन्धेरा है। आत्माओं की बुधी जानवर मिसल बन पड़ी है। शैतानी अथवा आसुरी बुधी बन पड़ी है। वहां आत्मायें प्योअर होने से दैवी बुधी रहती है। आत्मा ही पतित आत्मा ही पावन बनती है। बाप समझाते हैं अभी तुम्हारी आत्मा पतित आसुरी बन पड़ी है। पैर नाट अपेनी है। अब तुम पाउन्ड बन रहे हो। आत्मा प्योअर होने से फिर शरीर भी प्योअर मिलेगा।

यहाँ आत्मा इम्पयोअर है तो शरीर भी इम्पयोअर, दुनिया भी इम्पयोअर है। इन बातों को तुम्हारे में भी कोई थोड़े है जो यथार्थ रीत समझते हैं। और उनके अन्दर में रकुशी होती है। नम्बरवार पुरुषार्थ तो करते रहते हैं। ग्रहचारी भी होती है। कवरीहू की ग्रहचारी बैठती है तो आश्चर्य वत भागन्ती हो जाते हैं। बृहस्पत की दृशा से बदल कर ठक्‌रा हू की दृशा बैठ जाती है। काम विकार में गया और राहू की दृशा बैठी। मल्ल युद्ध होती है ना। तो माताओं ने देखा नही होगा। स्त्री की मातायें होती हैं घर की क्षत्री। तुमको मालूम है भरमरी को थोड़ी क्षेत्री कहते हैं। अर्थात घर बनानेवाली। घर बनाने का अच्छा कारीगर है। इसलिये क्षेत्री नाम है। कितनी मेहनत करती है। वो भी पक्का मिस्त्री है। दो तीन कमरा बनाती है। तीन चार को ले आती है। वैसे तुम भी ब्राह्मणियां हो। चाहे एक दो को बिठाओ। चाहे 10, 12 को। चाहे 100 को, 500 को बिठाओ। मण्डप आद बनाती हो। वो घर बनाया हुआ ना। उनमें बैठ सबको सबको भूं 2 करती हो। फिर कोई तो समझ कर कीड़े से ब्राह्मण बनते हैं। कोई सड़ा हुआ निकलते हैं। अर्थात इस धर्म का नही है। इस धर्म वालों को ही पूरी रीत टच होगा। तुम तो फिर भी मनुष्य हो ना। तुम्हारी ताकत उनसे जास्ती है। तुम दो हजार के बीच भी भाषण कर सकती हो। आगे चल कर चार, पांच हजार की सभा में भी तुम जावेगी। अमरीकी तुम्हारे से भेंट दे। सन्यासी यह भेंट कर नही सकते। वो तो किसीको राजयोग सिखा ही नही सकते हैं। विश्व का मालिक तो बाप ही बनाते हैं। गवर्मेन्ट तो बिलकुल ही घोर अन्धेरे में है। साधु सन्त आज कितने ढेर हैं। आजकल माईयां भी गुरू बन करके पहन कर जाती हैं। फारेन्स को ठग कर आती हैं। वो समझते हैं यह भारत का प्राचीन योग है। उनको कहते हैं भारत में चल कर सीखो। तुम ऐसे थोड़ेई कहेंगी कि भारत में चल सीखो। तुम तो फारेन में जावेगी वहाँ ही बैठ तुम समझावेंगी। यह राजयोग सीखो। तो स्वर्ग में तुम्हारा जन्म हो जावेगा। इसमें कपड़े आद बदलने की बात नही है। यहाँ ही देह के सब सम्बन्ध भूल अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप ही लिबरेटर, गाईड है। सबको दुख से लिबरेट करते हैं। अभी तुमको सतोप्रधान बनना है। तुम पहले गोल्डन ऐज में थे अब आयरन ऐज में हो। सारा वर्ल्ड, सब धर्मवाले आयरन ऐज में हैं। कोई भी धर्म वाले हों उनको कहना है अपने को आत्मा समझो मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। फिर मैं साथ ले जाऊंगा। बस इतना ही बोलो।

जास्ती नही हो। यह तो बहुत सहज है। तुम्हारे शास्त्रों में भी है कि घर-2 में संदेश दिया। कोई एक रह गया तो उसने उलहना दिया कि मुझे कोई ने बताया ही नही। बाप आये हैं तो पूरा ढिंढोरा पीटना चाहिये। एक दिन सभी को जरूर पता पड़ेगा बाप आये हैं। शान्ती धाम सुख धाम का वर्सा देने। बरोबर जबड़ीटी इज्म था तो और कोई धर्म नही था। सभी शान्ती धाम में थे। ऐसे-2 खयालात चलनी चाहिये। सलोगन बनाने चाहिये। बाप कहते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भुलू छोड़ो। अपने अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। तो आत्मा प्योअर बन जावेगी। अभी आत्मायें इम्प्योअर हैं। अभी सबको प्योअर बनाकर बाप गाईड बनाय ले जावेंगे। सब अपने-2 सैक्शन में चले जावेंगे। फिर डीटी धर्म वाले नम्बरवार आवेंगे। कितना सहज है। यह तो बुद्धी में धारण होना चाहिये। जो सर्विस करते हैं वो छुप नही सकते। डिससर्विस करने वाले भी छुप नही सकते। सर्विसेबुल को तो बुलाते रहते हैं। जो कुछ भी ज्ञान नही सुना सकते उनको थोड़ेई बुलावेंगे। वो तो और ही नाम बदनाम कर देंगे। कहेंगे ब्रह्मा कुमारियाँ ऐसी ही होती हैं क्या। पूरा ऐक्सप्लेन भी नही दे सकती तो नाम बदनाम हुआ ना। शिव बाबा का नाम बदनाम करने वाले ऊँच पद पा नही सकते। दैवनाट पैनी जाकर बनेंगे। जैसे यहाँ कोई तो करोड़ पति पदम पति भी हैं और कोई तो देखो भूख मर रहे हैं। भीख पर शरीर निर्वाह करते रहते हैं। ऐसे -2 बेगर्स भी आकर प्रिन्स बनते हैं। बेगर भी नही जो रोलू रास्ते पर जहाँ तहाँ बैठे रहते हैं। कैसे रोगी दुखी होते हैं। कर्मो की कैसी गन्दी भोगना होती है। जानवर को देख दिल
****
खुश होगी ऐसे गन्दे मनुष्यों को देख कर नफरत आती है। कितने डर्टी कर्म किये हैं। बहुत गन्दे काम करने से ही ऐसे डर्टी मूटा बिचारे लमपट लूले लगड़े, बन जाते हैं। बड़े-2 की भी [illegible] है। [illegible] पर भी पैजालाओं

मैं देखो कैयायें बैठी रहती है। पढ़े लोग भी गन्दे होते है। बाबा को तो सब बातों का अनुभव है।
ऐसे कोई मुश्किल अनुभवी होंगे। गायन भी है गांव का छोरा। अभी इनका यह अन्तिम 84वां जन्म गांव
का छोरा था नां। बाबा को सब अनुभव है। धन्धा भी क्या चलता था। हर इतवार को 5,6आना कमा
लेते थे तो शास्त्रों में जो बातें है वो कुछ-2ठीक है परन्तु इसका अर्थ वो समझ नहीं सकते हैं। बाप ही
बताते है। अब तुम बच्चे जानते हो वो ही श्रीकृष्ण जो स्वर्ग का प्रिन्स था वो फिर बेगर बनता है। फिर
बेगर टू प्रिन्स बनेंगे। बेगर थे नां। अभी बच्चे थोड़ा कमाया। वो भी तुम बच्चों के लिये। नही तो तुम्हारी
सम्भाल कैसे हो। यह सब बातें शास्त्रों में थोड़ेई है सब शिव बाबा आकर बताते है। बरोबर यह गांव का
छोरा था। बाकी कोई कृष्ण नही था। आत्मा की बात है नां। इसलिये मनुष्य मूंझे हुये है तो बाबा नें
समझाया शिव जयन्ती पर घर-2 में चित्रों पर सर्विस करो। लिख दो कि बेहद के बाप से 21जन्मों के लिये
स्वर्ग की बादशाही सेकिंड में कैसे मिलती है सो आकर समझो। जैसे दिवाली पर सब मनुष्य दुकानें निकाल कर
बैठते है, तुमको फिर अविनाशी ज्ञान रत्नों का दुकान निकाल बैठना है। तुम्हारा कितना अच्छा सजाया हुआ
दुकान होगा। मनुष्य करते है दिवाली पर। तुम फिर शिव जयन्ती पर करो। जो शिव बाबा सबकी ज्योत जगाते
है। तुमको विश्व का मलिक बनाते है। वो तो लक्ष्मी से विनाशी धन मांगते है। और यहां जगत अम्बा से
तुमको विश्व की बादशाही मिलती है। यह सब राज बाप समझाते रहते है। बाबा कोई शास्त्र थोड़ेई उठाते
है। बाप कहते है मैं तो नालेज फुल हूं नां। हां यह जानते है कि फलाने-2बच्चे सर्विस बहुत अच्छी करते
है। इसलिये याद पड़ते है। बाकी ऐसे नही कि एक एक के अन्दर को बैठ जानते है। हां कोई समय
पता पड़ जाता है कि यह पतित है। शक पड़ता है। उनकी शक्ल ही मायूस हो जाती है। तो ऊपर से
बाबा भी कहलायें भेजते है कि इनसे पूछो। वो ड्रामा में नूंध है जो कोई-2के लिये बताते है। बाकी ऐसे
नही सबके लिये बतावेंगे। ऐसे तो ढेर है काला मुंह करते रहते है। जो करेंगे सो अपना ही नुकसान करेंगे।
सच बताने से कुछ फायदा होगा। नां बताने से और ही अपना नुकसान करेंगे। समझना चाहिये बाबा
हमको गोरा बनाने आये है। और हम फिर काला मुंह करते है। इसमें भी बाप जो क्रियेटर है उसपर भी
है बहुत रेसपान्सिबिलिटी है। बच्चा अगर आज्ञाकारी नही तो उसको कुछ देने का नही होता है। नही तो वो
पाप ही करेंगे। उसका दोष उन पर भी आ जावेगा। बाकी कन्या को तो समझाना है। नां मानें तो शादी
करवा देना पड़े। नही तो गन्दी हो जावेगी। यह है ही कांटो की दुनिया। ह्यूमन कांटे है नां। साधु
सन्त आद जो भी है सब है जंगली। सतयुग को कहा जाता है गार्डन आफ अल्लाह। और यह है फारेस्ट
आफ थार्न्स। तुम भी बन्दर थे नां। शास्त्रों में क्या-2लिख दिया है। कितनी झूठी बातें लिख दी है। यह
है धर्म की ग्लानी के नावलस। इसलिये बाप कहते है जब-2धर्म की ग्लानी होती है तब मैं आता हूं। यह
है महामूर्खों की दुनिया। फर्स्ट नम्बर श्रीकृष्ण देखो, फिर 84जन्मों बाद कैसे महामूर्ख बन जाते है। अभी
सब हैं तमोप्रधान। आपस में लड़ते झगड़ते क्या-2करते रहते है। यह भी सब ड्रामा में है फिर स्वर्ग में कुछ
भी नही होगा। तुम बच्चे जानते हो यह चक्र कैसे फिरता है। कोई भी विद्वान आचार्य, पण्डित आद कुछ
भी नही जानते है। पुआइन्टस तो ढेर की ढेर है। नोट करनी चाहिये। जैसे बैरिस्टर लोग भी पुआइन्टस का
बुक रखते है नां। डाक्टर लोग भी किताब रखते है। उसे देख कर दवा देते है। तो बच्चों को कितनी
अच्छी रीत पढ़ना चाहिये। सर्विस करनी चाहिये। बाप नें नम्बरवन मन्त्र दिया है। मनमनाभव। बाप को
याद करो। सर्विस करनी चाहिये। मैडल में भी यह लगा हुआ है। सबको यह महामन्त्र दो कि बाप को
याद करो। बाप और वर्से को याद करो तो स्वर्ग की बादशाही मिल जावेगी। शिव जयन्ती मनाते है परन्तु
शिव बाबा ने क्या किया? जरूर स्वर्ग का वर्सा दिया होगा। योग युक्त को अच्छी रीत खुशी में बैठेगा। योग
युक्त नही होते है तो पाप रह जाते है। इतनी सदगती नही होती है। ज्ञान बहुत है योग कुछ भी नही
नाम रूप में फंसे रहते है उनकी ही याद रहती है तो बाप को कैसे याद करेंगे। बाप कहते है मुझे याद करो।